ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 15 July 2020

बलराम अग्रवाल की लघु.कथाओं में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ

निर्देशक
डॉ. प्रभात रंजन
सहायक प्राध्यापक
शासकीय संत गुरु घासीदास महाविद्यालय,
कुरूद, जिला-धमतरी (छ.ग.)

पी-एच.डी. शोधार्थी
कु. चन्द्रेश
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
मो. 8358972872
sahuchandresh78@gmail.com

सारांश

बलराम अग्रवाल बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न साहित्यकार हैं। वे एक सशक्त लघु. कथाकार, कवि, सफल कहानीकार, लघु–उपन्यासकार, अनुवादक एवं संपादक हैं तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर उनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। वर्तमान समय में हिंदी लघुकथा एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित हुई है। हिंदी लघुकथा के विकास में जिन लघु कथाकारों का अमूल्य योगदान रहा है, उनमें बलराम अग्रवाल का नाम उल्लेखनीय है। उनके लघु–कथाओं का मूल–स्वर समाज की विविध विसंगतियों, राजनीतिक, आर्थिक भ्रष्टाचार, शोषण, गरीबी, अंतद्र्वंद्व एवं पतन होती संवेदना एवं मानवीय मूल्यों का चित्रण है। तुलसीदास की तरह साहित्य को सदा ^स्वातः सुखाय' मानने वाले बलराम अग्रवाल ने लघुकथा में क्षण का विशेष महत्व माना है। उनका मानना है कि लघुकथा में क्षण सिर्फ समय को ही नहीं कहते, अपितु संवेदना की एकान्विति भी क्षण है। लघुकथा और संवेदना दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं, लघुकथा में मानव-जीवन के उत्थान, पतन, पीड़ा, संवेदना न हो तो वह लघुकथा नहीं, क्योंकि इसके शब्द ही लघुकथा की संजीवनी-शक्ति हैं, जो उसे प्रतिष्ठित करते हैं। अतः लघु-कथाओं में संवेदनाओं की सघनता का होना बहुत ही आवश्यक है। समकालीन लघुकथा के बहुचर्चित हस्ताक्षर बलराम अग्रवाल का इस क्षेत्र में विशेष योगदान है।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 15 July 2020

मुख्य शब्द :- लघुकथा, संवेदना, समकालीन, यथार्थ।

लघुकथा साहित्य की नवीन विधा नहीं, अपितु यह प्राचीन काल से चली आ रही पौराणिक कथाओं का नवीनीकरण माना गया है। "लघुकथा नयी सृष्टि नहीं प्राचीन काल से इसका अस्तित्व नाना रूपों में रहा है, दृष्टांत रूपक और नीतिकथाएँ लघुकथा का ही रूप रही है।"[1] लघुकथा कहानी का छोटा रूप है। अँग्रेजी में इसे 'शार्ट स्टोरी' कहते हैं और हिंदी में 'छोटी कहानी। पौराणिक लघु-कथाएँ दृष्टांतों के रूप में प्रचलित थीं. नैतिक दृष्टांतों के रूप में पंचतंत्र, हितोपदेश, बौद्धजातक, ईसप कथाएँ, धार्मिक दृष्टांतों के रूप में. रामायण, महाभारत, बाइबिल आदि प्रमुख था। ये लघु-कथाएँ प्रेरणाप्रद, उपदेशात्मक एवं नैतिक शिक्षा से ओत.प्रोत होती थी। आधुनिक लघु-कथाएँ संवेदनात्मक एवं यथार्थपूर्ण होती हैं। लघुकथा किसी स्थिति, प्रसंग, घटना या हृदय के भावों को पूर्ण रूप से प्रकट करती हैए जो लघुकथा की विशेषता है। "लघुकथा का इतिहास चाहे हो वेदों के काल से ही ट्रेस किया जा सकता है ब्राह्मण और उपनिषद् ग्रंथों की रूपक-कथाओं, पुराण-कथाओं आदि में हमें लघुकथा के सहज दर्शन प्राप्त हो सकते हैं... पंचतंत्र और हितोपदेश की कथाएँ भी अच्छी-खासी लघुकथाएँ कही जा सकती हैं।"[2] आधुनिक लघुकथा की शुरूआत कुछ विद्वानों ने बीसवीं सदी माना है और कुछ इक्कीसवीं सदी से मानते हैं। **डॉ.** शकुन्तला किरण के अनुसार "वर्तमान यांत्रिक युग की तेजी से बदलती बाह्य एवं आंतरिक स्थितियों के प्रभावों से उत्पन्न संघर्षों की प्रतिक्रियात्मक अभिव्यक्ति स्वरूप आठवें दशक के आरंभ में आधुनिक हिंदी में लघुकथा का उदय हुआ।"[3] कहानी की तरह लघुकथा को परिभाषित करना पड़े तो यह कहा जा सकता है कि "साहित्य रूपी ब्रह्मांड के विस्तार में लघुकथा सूर्य की उष्णता और विशालता नहीं, मेघाच्छन्न आकाश में कौंधी हुई बिज़ली के समान है, जो पाठक के मस्तिष्क पर तीव्र प्रभाव छोड़कर गुम हो जाती है।"[4] लघुकथा की प्रथम और आखिरी विशेषता अल्पतम शब्दों में बहुत कुछ कह देना है। लघुकथा की सटीकता, संक्षिप्तता, तीखापन उसकी विशेष पहचान है। आधुनिक लघुकथा विविध विसंगतियों एवं विडंबनाओं के बीच उभरी स्वतंत्र साहित्यिक विधा है।

वर्तमान लघुकथा का संबंध आम जनता के जीवन से है। वर्तमान समय में मनुष्य जिस पीड़ा से ग्रस्त जीवन जी रहा है, उसका यथार्थ रूप या सटीक अभिव्यक्ति लघुकथा के माध्यम से संभव हो सकता है। सुश्री ज्योत्सना गुप्त के कथनानुसार- "यांत्रिकता जो जन्मा रही है, उसकी परिणति मानवीयता को प्रभावित कर रही है। प्रभावित मानव टुकड़ों में जी रहा है, इसी जीवन को आत्मसात कर लघुकथा जन्मी है।"[5] इससे स्पष्ट होता है कि भागदौड़ भरी मशीनी युग में मानवता समाप्त होती जा रही है। आज मानव के दुःख-दर्द, पीड़ा, घुटन आदि का चित्रण करने में लघुकथा महत्वपूर्ण विधा साबित हुई है। आज समाज विसंगतियों से घिरा है। समाज में परंपरावाद, जातिवाद एवं रूढ़िवादी सिद्धांत व्याप्त हैं, जो समाज को पतन की ओर लेकर जा रहे हैं। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। एक साहित्यकार ही है जो समाज की विसंगतियों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है और विसंगतियों के प्रति जागरूक करता है तथा समस्याओं के प्रति सचेत करता है और उसका यथार्थ रूप प्रस्तुत करती है। यथार्थ एवं यथार्थवाद दोनों एक ही हैं, जो जीवन की सच्ची अनुभूतियों को प्रकट करते हैं। एक साहित्यकार ही मानव-जीवन एवं

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 15 July 2020

समाज का वास्तविक रूप प्रस्तुत करता है। मुंशी प्रेमचंद लिखते हैं- "साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह पूर्ण रूप से उसी अवस्था में उत्पन्न होता है, जब उसमें जीवन की सच्चाइयाँ और अनुभूतियाँ व्यक्त की गई हो।"[6] यथार्थवाद जीवन का यथावत रूप प्रस्तुत करने वाली साहित्यिक विचारधारा अथवा प्रकृति है, यह कोई व्यक्तिगत विचार नहीं है, यह कोई प्रचार-प्रसार का साधन नहीं अपितु अपने आस-पास घटित होने वाली घटनाओं का यथार्थ चित्रण है। केशव शर्मा- "प्रत्येक मनुष्य जीवन और जगत् के सत्य को उसके वास्तविक रूप में देखना चाहता है, जो भी दिखाई देता है वही यथार्थ है, किंतु प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक चीज अलग-अलग ढंग से अनुभव करता है।"[7]

बलराम अग्रवाल की लघु–कथाओं में वर्तमान जीवन की त्रासदियों, समाज का परिवेश, विद्रूपताओं, विसंगतियों एवं विडंबनाओं की मनोवैज्ञानिक सच्चाई को चित्रित कर अंतःप्रेरणा को जाग्रत करती है। बलराम अग्रवाल की लघुकथा युग के सत्य का चित्रण है, इनकी दृष्टि यथार्थवादी है। इनकी लघु-कथाओं में युग की सच्चाई, गहन अनुभूति तीक्ष्णता के साथ प्रकट हुई है। बलराम ग्रवाल की लघु.कथाओं में उनका देखा-भोगा हुआ यथार्थ उनकी गहरी संवेदना को प्रकट करती है। इसी कारण इनकी लघु.कथाओं में संवेदना, अनुभूति, स्थितियाँ चित्रों एवं बिम्बों के माध्यम से प्रस्तुत हुई है। लघुकथा 'ओस' में व्यक्त संवेदना दृष्टव्य है- "रात्रि की शीत का आभास पाकर सूर्य समय के शायद कुछ पहले ही संध्या के आँचल में छिप जाना चाहता था। शरीर के ताप को चीर देने वाली गीत ने हल्के अंधकार में ही नगर के मकानों के द्वार बंद कर दिए थे। धीरे-धीरे घोर अंधकार नगर की गलियों में बिखर गया। चिंघाड़ती वायु शीत का सहयोग पाकर वृक्षों का जैसे सीना चीर देना चाहती थी। सारा नगर उपयुक्त ताप में लिपटा सो रहा था। नगर से दूर खेतों-खलिहानों के बीच एक पुरानी झोपड़ी में दीपक की लौ शीत लहर को न झेल पाने के कारण कुछ समय काँपने के पश्चात् लुप्त हो गई। खेतों में कहीं दूर कई सियार एक साथ हूके। फटे लिहाफ को कुछ और लपेटकर वृद्धा ने शीत को भूलने की कोशिश की। झोपड़ी की देहरी के समीप ही एक कोने में पड़ी बछिया ने सिर को अपने पेट में कुछ और अधिक घुसेड़ लिया। शीत से घबराकर तेजी से भागते ठिगने युवक ने झोपड़ी में प्रवेश किया। शीघ्रता में चलने के कारण वह बछिया से टकरा गया। 'अम्बा...।' बछिया की भिंची आवाज़ उभरी।... 'कौन... ?' लिहाफ में लिपटी वृद्धा ने यूँ ही पूछा।... 'दादी माँ ! रात बिता लूँ ?... कुछ देर की नीरवता के बाद वृद्धा खाँसते-खाँसते हकलाई- 'हे राम... मुझे उठा !' शेष शब्दों को खाँसी ने कफ में मिलाकर धरती पर उड़ेल दिया।.. 'उठो नहीं, तुम सो जाओ दादी माँ मैं बैठे-बैठे ही रात गुजार लूँगा।' युवक ने घुटनों को पेट मे घुसेड़कर दोनों हाथों के घेरे में जकड़ लिया। ओस तलाशती सूर्य की भोर किरणों ने झोपड़ी की कपाटहीन देहरी को घेर लिया। देर से कफ को मक्खियों ने दिन भर का भोज्य समझ अपना लिया। ठिंगना युवक बछिया सहित रातों.रात अन्तर्ध्यान हो चुका था। ओस में सीले हुए तिनकों वालों वृद्धा की झोपड़ी को उस पर लदी फली-फूली बेल सहित सद्भावनावश गिरवी रख कर सेठ ने कुछ रुपये दे दिए। पड़ोसियों ने वृद्धा के निर्जीव शरीर को अरथी पर जकड़ने का श्रेय अपने कंधों

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 15 July 2020

पर ले लिया। मोहक कहलाने वाली गुनगुनाती किरणें शीत वायु को पीठ पर टिकाकर श्मशान को एक और आगमन का संदेश सुना आई।"[8]

इस लघुकथा में व्यक्त समाज के संपन्न व्यक्तियों की मानसिक जड़ता, क्रूरता एवं संवेदनहीनता, असहाय अकेली बुढ़िया की पीड़ा, क्रूर सेठ, ठिंगना जैसा ठग और असमर्थ पड़ोसियों का चित्रण हुआ है। "ज्ञानेन्द्रियों की उत्तेजना से उत्पन्न होने वाला यह अनुभव संवेदना कहलाता है।"[9] जिसमें सुख व दुःख की अनुभूति होती है, जिसे व्यक्ति रोकर या हँसकर उसे अभिव्यक्त करता है। संवेदना, अनुभतिपूर्ण शारीरिक एवं मानसिक क्रिया है, मन की व्यथा से ही संवेदना उपजती है अतः संवेदना मन की सूक्ष्म अनुभूति है. जिसे लेखक अपनी चेतनानुभूति और सहानुभूति से पाठकों तक पहुँचाता है।

'अंतिम संस्कार' बलराम अग्रवाल की यथार्थवादी संवेदनहीन मानवीयता की लघुकथा है, जिसमें अत्यंत मर्म हृदय की व्यथा का मर्मस्पर्शी तथा विद्रूप चित्रण हुआ है। शहर में लगे कफ्र्यू के कारण पिता के अंतिम संस्कार को लेकर पुत्र की विवशता से उत्पन्न संवेदन शून्यता को चित्रित करती है। वह बेटा जो दरिद्रता के कारण अपने बीमार पिता का ईलाज नहीं करवा पाता और कफ्र्यू के कारण डर से तेज हथियार से मृत पिता का पेट काटकर सड़क पर फेंक देता है। यहाँ उस बेटे की विवशता, दयनीय दशा का चित्रण हुआ है। इसी तरह 'जुबैदा, 'अकेला कब तक लड़ेगा जटायु' जैसी लघु-कथाओं में अमानवीयता का चित्रण हुआ है, जिसमें हताशा भी है और गहरी संवेदना भी।

'अकेला कब तक लड़ेगा जटायु' में अन्याय से लड़ने का साहस भी है, दृढ़ता भी है पर निराशा भी है। तमाम विपरीत परिस्थिति में दूसरे के दुःख से दुःखी हो उठना मानाव बनने की रचना-प्रक्रिया को जन्म देती है। अकेला जटायु विपरीत परिस्थितियों से दीर्घकाल तक नहीं लड़ सकता लेकिन अमानवीय कृत्यों के खिलाफ उठ खड़ा तो हो सकता है। यह लघुकथा प्रस्तुत है- "लगभग चौथे स्टेशन तक कम्पार्टमेंट से सभी यात्री उतर गए। रह गया मैं और एक लड़की। कम्पार्टमेंट में अनायास उपजे इस एकांत ने अनेक कल्पनाएँ मेरे मन में भर दी, काश ! पत्नी इन दिनों मायके में रही होती... बीमार... या फिर। कल्पनाओं की इस उन्माद में अपनी सीट से उठकर मैं उसके समीम जा बैठा। गाड़ी अगले स्टेशन में रूकी। एक... दो... तीन... नये यात्रियों ने प्रवेश किया, पूरे कम्पार्टमेंट का चक्कर लगाया और एक-एक कर उनमें से दो हमारे सामने वाली बर्थ पर आ टिके।... 'कहाँ जाओगे ?' गाड़ी चलते ही एक ने पूछा।... 'शामली।' मैं बोला।... 'यह ?' सभ्यता का अपना लबादा उतारकर दूसरे ने पूछा।... मैं हकलाया।' 'मैं पत्नी हूँ इनकी।' स्थिति भांपकर लड़की बोली। अपनी दायीं बाँह से मेरी बाँह को जकड़ लिया।... 'ऐसी की तैसी... तेरी और तेरे शौहर की।' दूसरे ने झड़ाक से एक झापड़ मुझे मारकर लड़की को पकड़ लिया।... 'बचा लो... बचा लो... चुप न बैठो...।' मेरी बाँह को कुछ और जकड़कर लड़की भयंकर भय और विषाद से डर उठी। उन गुण्डों ने बलपूर्वक उसे मेरी बाँह से छुड़ा लिया। मेरे देखते-देखते ही छटपटाती-चिंघाड़ती उस लड़की को कम्पार्टमेंट में दूसरी ओर ले गए।... 'लड़की को छोड़ दो।'... यह स्वर निश्चय ही उस ओर बैठा तीसरा यात्री था। उस गहन रात को दनादन चीरती जा रही गाड़ी के गर्भ में उसकी

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 15 July 2020

चेतावनी के साथ ही हाथापाई और मारपीट प्रारंभ हो जाने का अभास हुआ। काफी देर तक दौर चलता रहा। कई स्टेशन आए और गुजर गए। डिब्बे में अंततः नीरवता महसूस कर मैंने पेशाब के बहाने उठने की हिम्मत की। जाकर संडास का दरवाजा खोला तीसरे का नंगा बदन वहाँ पड़ा था... लहू-लुहान... जगह-जगह कटा चेहरा। आहट पाकर पल भर को उसकी आँखें खुली... नज़र मिलते ही आँखों के पार निकलती आँखें। मर मिटने का तिल भर माद्दा तुम अपने अंदर संजोते तो लड़की बच जाती... और गुण्डे !... कहते मेरे मुँह पर थूकती... धू.धू करती आँखें। उफ्फ !"

उसी तरह 'जुबैदा' लघुकथा में जुबैदा पति के द्वारा सताई गई तलाकशुदा औरत है जो अपने बच्चों के साथ अकेले दुःख भरी ज़िंदगी जी रही है, वह आत्मनिर्भर होकर अपने साथ हुए अन्याय के खिलाफ अपने अधिकारों के लिए लड़ रही है. जिसमें उनके अपने भी उनका साथ नहीं देते। लेखक जुबैदा से कहना चाहता है कि 'दुविधा और विषाद मौत के ही दूसरे नाम हैं। संघर्ष ही सच है जुबैदा' सच को जीओ। दुर्भाग्य तो यह है कि जुबैदा अन्याय के संघर्ष में अकेली है और अन्यायी शक्तियों से घिरी हुई है।

यथार्थ और संवेदना से भरी इस लघुकथा में आज समाज का एक वर्ग समाज की परंपरागत आदर्शों, मानवीय मूल्यों एवं नैतिकताओं की बलि चढ़ा कर अपहरण, बलात्कार, हत्या में लगा हुआ है, तो वहीं कुछ इसका विरोध करते हैं, लड़ना चाहते हैं, उनकी आवाज़ को दबा दिया जाता है और बिना अपराध के दंड के शिकार हो जाते हैं। बलराम अग्रवाल ने लघुकथा को विश्वसनीयता के साथ घटनाओं को अपने अनुभव से प्रस्तुत किया है।

बलराम अग्रवाल की लघु.कथाओं में नगरए शहर के साथ ग्रामीण परिवेश का भी चित्रण हुआ है, जो शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं नैतिक शोषण के शिकार होकर विवशतापूर्ण ज़िंदगी जी रहे हैं। इनकी लघुकथाओं में परंपरावाद, जातिवाद, अंधविश्वास और रूढ़िवादी जीवन जी रहे लोगों का चित्रण है, तो वहीं जागरूक युवा.पीढ़ी जो इन कुप्रथाओं के विरूद्ध हैं। 'रामभरोसे, 'अलाव के इर्द गिर्द, 'बंदलेराम कौन' आदि लघुकथाएँ इसी प्रकार की हैं।

गाँव में जमींदारी प्रथा स्वतंत्रता के बाद भी ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का भेद, उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर अत्याचार समाज में व्याप्त हैं। जमींदार किस तरह असहाय, निर्धन, गरीब, मजदूरों का शोषण करते हैं और हड़प करने की नीति ऐसे ही 'रामभरोसे' लघुकथा में रामभरोसे जाति का चमार है। गाँव का पंडित रामभरोसे की बहन की इज़्जत लूट लेता है। रामभरोसे आक्रोश में आकर उसकी हत्या करने कुल्हाड़ी उठा लेता है, जिसे उसकी माँ और चाचा रोक देते हैं कि वह ब्राह्मण है और उसकी हत्या की तो ब्रह्महत्या का पाप लगेगा सो तो है और साथ ही तुम्हें फाँसी हो जाएगी। उसकी माँ अपनी बेटी को कोसती है और मारपीट करती है। रामभरोसे नहीं रूकता कि या तो वह पंडित मेरे हाथों मरेगा या फिर चमार जाति में शामिल होगा। रामभरोसे को उसके चाचा रामआसरे समझाते हैं कि वह कुल्हाड़ी फेंक दे और पंडित को मारने का पाप न ले, क्योंकि उसकी बहन कोई और नहीं उसकी माँ के साथ पंडित के अत्याचार का फल है। यह बात सुन रामभरोसे कुल्हाड़ी को और मजबूती से पकड़ लेता है और कहता हैं कि अब तो वह

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 15 July 2020

पंडित की हत्या करके ही रहेगा। इस लघुकथा में नीची जाति के साथ शोषण, अत्याचार, वर्ग-भेद, जाति-भेद, रूढ़िवाद का चित्रण हुआ है।

इसी तरह 'अलाव के इर्द गिर्द' लघुकथा में आँचलिक ग्रामीण परिवेश का चित्रण हुआ है। एक ऐसा गाँव जो जमींदादों के आतंक और अत्याचार से व्यथित है, जो आजादी के लिए झटपटा रहा है। गाँव, गाँव के लोग, उनके खेत-खलिहान यहाँ तक कि खेतों में लगी फसल जमींदार के इशारों पर चलते हैं। गाँव वाले इसका विरोध करना तो चाहते हैं, पर जागरूकता की कमी और लोगों में बिखराव के कारण भयभीत हैं। अलाव हमारे गाँव, परिवार, समाज और देश का प्रतीक है, जिसे मिसरी और बदरू जैसे लोग बूझने नहीं देना चाहते। वो ग्रामीणों में जागरूकता एवं एकत लाना चाहते हैं एवं अपने घर.परिवार एवं समाज को बचाना चाहते हैं। इस प्रकार बलराम अग्रवाल की लघु.कथाएँ समाज की विषमताओं का यथार्थता के साथ चित्रण करते हैं।

लघुकथा-लेखन के क्षेत्र में बहुचर्चित लघु-कथाकार बलराम अग्रवाल ने अपनी सशक्त रचना-धर्मिता से अपनी अलग पहचान बनाई है। अपने लेखन के माध्यम से लघुकथा को एक निश्चित रूप प्रदान किया है। उनका मानना है कि "लघुकथा कथा-साहित्य की स्वतंत्र विधा है, तो उसमें कहानीपन का होना आावश्यक है।" लघु-कथाओं में मानवीय संवेदना, धार्मिक, सांस्कृतिक मतभेद, परंपरावाद, जातिवाद एवं जमींदारी-प्रथा आदि बलराम अग्रवाल के लघु-कथाओं का विषय रहा है। उनके लघु.कथाओं में समाज की विडंबनाओं, विषमताओं का मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण हुआ है। साथ ही उनके लघु-कथाओं में संवेदनशीलता से उत्पन्न व्यंग्य के तीखे स्वर भी देखने को मिलते हैं। उनकी लघु-कथाएँ नावक के तीर की तरह हैं जो मानव-मन पर अपना गंभीर प्रभाव छोड़ती हैं तथा सोचने को विवश कर देती हैं।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 15 July 2020

संदर्भ.सूची

1. शकुन्तला, 'किरण. हिंदी लघुकथा. अजमेर : संकेत प्रकाशन, 2009, पृ. 69.
2. पुणताम्बेकर, शंकर. श्रेष्ठ लघुकथाएँ. कानपुर : पुस्तक संस्थान प्रकाशन, 1977, पृ. 7.
3. शकुन्तला, 'किरण. हिंदी लघुकथा. अजमेर : संकेत प्रकाशन, 2009, पृ. 69.
4. बलराम, मानक हिंदी लघुकथा कोश-पहला भाग. दिल्ली : भावना प्रकाशन, 2009, पृ. 2.
5. शर्मा, अंजलि. हिंदी लघुकथा का विकस. रायपुर : शताक्षी प्रकाशन, 2006, पृ.2.
6. नूरजहाँ, हिंदी कहानी में यथार्थवाद. इलाहाबाद : अभिनव भारती, प्रथम संस्करण, 1976, पृ. 7.
7. शर्मा, केशव. अमृलाल नागर के उपन्यासों में यथार्थ बोध और गाँधी दर्शन. मथुरा : अमर प्रकाशन, 2004, पृ. 27.
8. अग्रवाल, बलराम. जुबैदा (लघुकथा संग्रह). दिल्ली : मनु प्रकाशन, 2004, पृ. 10.
9. कुमारी, राकेश. मोहन राकेश के कथा.साहित्य का संवेदना पक्ष. गाजियाबाद : साहित्य संस्थान, प्रथम संस्करण, 2004, पृ. 10.
10. अग्रवाल, बलराम. जुबैदा (लघुकथा संग्रह). दिल्ली : मनु प्रकाशन, 2004, पृ. 10.

-

,

Copyright @ 2020 Authors